International Journal of Geology, Agriculture and Environmental Sciences
Volume – 11 Issue – 2 July-December 2023
Website: www.woarjournals.org/IJGAES *ISSN: 2348-0254*

खेतड़ी बांसियाल कंजर्वेशन रिजर्व व जैव विविधता

डॉ. महेश कुमार बबेरवाल, *एसोसिएट प्रोफेसर भूगोल, एसएनकेपी राजकीय महाविद्यालय नीम का थाना*

पृथ्वी पर मौजूद जीव जंतुओं तथा वनस्पतियों की लाखों–करोड़ों प्रजातियां नदियों, वनों, झीलों, समुद्री क्षेत्र सभी को मिलाकर जैव विविधता कहा जाता है। 1992 में पहली बार रियो डी जनेरा (ब्राजील) में हुए पृथ्वी षिखर सम्मेलन में शामिल देषों ने जैव विविधता तथा पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया गया था। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार पृथ्वी पर जल–थल क्षेत्रों में करीब 1.40 करोड़ तक सूक्ष्म जीवों, वनस्पतियों, पेड़–पौधों व अन्य जीवों की प्रजातियां है। जैव विविधता का अर्थ सभी स्त्रोतों से तथा परिस्थितिकीय जटिलताओं, जीव–जंतुओं, वनस्पतियों की विभिन्न प्रजातियों और परि प्रणाली की भी परस्पर जीवित रचनाओं में विभिन्नता से है।

वैज्ञानिको का कहना है कि वर्तमान में मानव जिस तरह आर्थिक क्रियाओं को नये आयाम दे रहा है उससे पृथ्वी पर मौजूद सैकड़ों ज्ञात व अज्ञात प्रजातियों के विनाष का खतरा पैदा हो चुका है। इनमें लगभग चार सौ सालों में लगभग 1200 जानवर तथा 3632 प्रजातियां वनस्पति की है। मानव की आर्थिक रफ्तार ने बढ़ती जनसंख्या, घटते वन, घटता कृषि क्षेत्र और मानव के विभिन्न विकास कार्य जिसमें औधोगिकीकरण मुख्य है ने इस विनाष चक्र को गति प्रदान की है।

भारत के सन्दर्भ में अगर जैव विविधता के बारे में बात करे तो यहां की भौगोलिक विविधता में बर्फ के पहाड़, सदाबहार वन, रेगिस्तान, तटीय क्षेत्र, वेट–लैण्ड में जैव विविधता के साक्षात दर्षन होते है। इस भौगोलिक विषमता के कारण भारत में कई जैव विविधता वाले क्षेत्र स्थित है। भारतीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय द्वारा करवाये गये सर्वेक्षण के मुताबिक यहां 75 हजार जीव–जंतुओं, पेड़–पौधों को, 45 हजार स्तनपायी जीवों को 340 पक्षियों की, 1200 सरीसृपों की, 420 उभयचरों की, 140 प्रजातियां लगभग 4000 समुद्री सीप, 50 हजार कीड़े–मकाड़ों की प्रजातियां पाई जाती है। साथ ही 15 हजार पुष्पीय पौधे, 5 हजार समुद्री शैवाल, 20 हजार फफूंद, 16 हजार लाईकेन, 27 हजार ब्रायोफाईट और लगभग 600 टेरिड़ोफाईटस प्रजातियां है।

राजस्थान में भी धरातलीय एवं भौगोलिक स्वरूप की भिन्नता यथा पठारी, मैदानी, पहाड़ी रेगिस्तानी क्षेत्र पाये जाते है। इसी के अनुरूप यहां पर भौगोलिक भिन्नता के कारण वर्षा की मात्रा के आधार पर वनस्पति का स्वरूप भी पाया जाता है।

वन, जैव वनस्पति पर्यावरण संतुलन की एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जो राज्य की अर्थ व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। राज्य के कुल घोषित वन क्षेत्र 32,737 वर्ग किमी. है जो राज्य के भौगोलिक क्षेत्र का 9.57 प्रतिषत है। राज्य में वन आच्छादित क्षेत्र 4.86 प्रतिषत है जो वन क्षेत्र तथा उसके बाहर अवस्थित है।

संरक्षण के उद्देष्य–

1. वनों को संरक्षित करना।
2. वनस्पति व जीवों हेतु अनुकूल वातावरण बनाना।
3. वनीय जीवों के षिकार पर रोक व षिकार को प्रतिबंधित करना।
4. प्राकृतिक वनस्पति व जीवों को संरक्षित करना।
5. आमजन को जैव विविधता के बारे में जानकारी देना।

राजस्थान में जैव विविधता संरक्षण हेतु संरक्षित क्षेत्रों का विकास किया जा रहा है। इस हेतु राष्ट्रीय उद्यान एवं अभयारण परिस्थितिकीय तंत्र को संतुलित बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। ऐसे क्षेत्रों में आखेट व वन काटने पर पूर्णतया प्रतिबंध होता है। राज्य में तीन राष्ट्रीय उद्यान वर्तमान में अवस्थित है। इसी क्रम में वन्य जीव अभयारण ऐसे क्षेत्र है जिनमें वन्य जीवों का षिकार करना

अथवा पकड़ना वर्जित होता है। इसी क्रम में कुछ क्षेत्रों को आखेट निषिद्ध क्षेत्र भी घोषित किया जाता है। जहां आखेट प्रतिबंधित होता है। राज्य में 27 वन्य जीव अभयारण स्थापित किये गये है। राज्य में 16 संरक्षित क्षेत्र स्थापित किये गये है। जैव विविधता के संरक्षण और विकास हेतु राज्य में 3 बॉयोलोजिकल पार्क जयपुर, उदयपुर एवं जोधपुर में विकसित किये गये है।

भारत सरकार द्वारा अधिसूचित जैविक विविधता अधिनियम 2002 के प्रावधान के तहत राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड का गठन किया गया है। राजस्थान राज्य ने जैविक विविधता अधिनियम 2002 की धारा 63(1) के तहत राजस्थान जैविक विविधता नियम 2010 को अधिसूचित किया है।

राजस्थान के झुंझुनूं जिले में स्थिति खेतड़ी तहसील जो की अरावली पर्वतमाला के कारण दो स्पष्ट भागों में विभाजित किया जा सकता है। खेतड़ी का पहाड़ी क्षेत्र कभी रियासत काल के दौरान से वन क्षेत्र से आच्छादित था और खेतड़ी क्षेत्र में जल संरक्षण हेतु रियासत कालीन तीन बड़े जलीय स्त्रोतों का निर्माण करवा जिससे यहां के भूजल स्तर में गिरावट नहीं होती थी। खेतड़ी के अरावली क्षेत्र में धोक, डांसर, गंगेरन, रोंझ, थोर, चापनेर, छीला, बेर, नागफनी, बबूल, कैर, खेजड़ी, नीम, आंकड़ा, शीषम, जामुन आदि की स्थलीय पादप, धामण घास, लापला घास, भंरूट मूंजा घास व सिंघाड़ा, जलकुम्भी जलीय पादप के साथ–साथ तीतर, बटेर, भेड़िया, मानीटर, दुमुही, नीलगाय, लोमड़ी आदि प्रमुखता से पाये जाते है जो एक विषेष प्रकार की जैव विविधता को प्रदर्षित करते है।

विष्व पर्यावरण दिवस के मौके पर खेतड़ी क्षेत्र को एक बड़ी सौगात मिली है। खेतड़ी क्षेत्र में 2017 में बांसियाल खेतड़ी कंनर्वेषन रिजर्व घोषित किया गया था, को 5 जून 2023 से जंगल सफारी शुरू हो रही है। इस क्षेत्र में लगभग 7018 हैक्टेयर में वन फैले हुए है। पहाड़ी और घना जंगल होने के कारण ये इलाका पैंथर को रास आ गया है और इसका परिवार लगातार बढ़ता जा रहा है। वन विभाग के आँकड़ो के अनुसार यहां करीब 15 पैंथर है। इनके अलावा यहां 42 जरख 910 सियार, 97 जंगली बिल्ली, 11 मरू बिल्ली, चिंकारा, नीलगाय, लोमड़ी, सेही, खरगोष सहित विभिन्न प्रजातियों के पक्षी यहां देखे जा सकते है। यह अरावली क्षेत्र का हिस्सा वर्तमान में रिजर्व घोषित होने के पष्चात् इस क्षेत्र का वन क्षेत्र जो लगातार घट रहा था तथा यहां पर जीव जंतुओं के आवासीय क्षेत्र में कमी आ रही थी वन क्षेत्र के बढ़ने व लकड़ी कटाई की रोक के कारण यहां की परिस्थिकीय संतुलन धीरे–धीरे सुधर रहा है। क्षेत्र में जीव–जंतुओं व वनस्पति के संरक्षण के कारण यहां वर्षा की मात्रा में औसतन वृद्धि गत वर्षो में दिखाई दी है। रिजर्व क्षेत्र घोषित होने के कारण क्षेत्र को ईकोटूरिज्म के तहत पैंथर सफारी के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस वन खंड के दोनो ओर बिस्सा वन क्षेत्र और बागौर कंजर्वेषन रिजर्व को मिलाकर करीब 14 हजार हैक्टेयर वन क्षेत्र को भी विकसित किया जावेगा। पैंथर सफारी शुरू होने से क्षेत्र में पर्यटन उद्योग की संभावनाऐ भी धीरे–धीरे शुरू हो जायेगी चूंकि खेतड़ी रियासत प्राचीन रियासत है जिसके कारण यहां अनेक दर्षनीय स्थलों का आनन्द भी पर्यटक ले सकेगे जिससे क्षेत्र का आर्थिक स्परूप भी बदलेगा।

5 जून 2023 को विष्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर मुख्यमन्त्री अषोक गहलोत द्वारा वर्चुअल उद्घाटन किया। इस खेतड़ी–बांसियाल कंजर्वेषन क्षेत्र को पर्यटन के रूप में भी विकसित करने का प्रयास किया जायेगा। इसके लिए राजस्थान सरकार जयपुर द्वारा वर्ष 2017–18 से वर्ष 2026–27 तक की अवधि की प्रबंध योजना स्वीकृत की गई है। रिजर्व क्षेत्र में जंगल सफारी शुरू होने के पष्चात् क्षेत्र में पर्यटन की प्रबल संभावनाए है। अभयारण क्षेत्र में इकोटूरिज्म के तहत पर्यटकों के लिए जंगल सफारी से स्थानीय लोगों को रोजगार और आय बढ़ेगी एवं राज्य स्तर पर एवं राष्ट्रीय स्तर पर खेतड़ी की एक नई पहचान बनेगी।

खेतड़ी के इस रिजर्व क्षेत्र के आस–पास के इलाके (पपुरना) के पास खनन कार्य से यहां के जल स्तर में लगातार गिरावट आ रही है साथ ही क्षेत्र में वायु प्रदूषण इस कदर बढ़ रहा है कि क्षेत्र के आस–पास के इलाकों में लोगों के श्वास से संबंधित अनेक बीमारियां हो गई है। इसी खनन कार्य के कारण क्षेत्र के वन्य क्षेत्र में रहने वाले जीव जन्तु तथा अनेक प्रकार की वनस्पति प्रजाति पर संकट आ गया है। वन्य संरक्षण के हिसाब से इसी क्षेत्र में भारत सरकार के रक्षा मन्त्रालय द्वारा स्थापित आयुध डिपो एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है क्योंकि इसके स्थापित होने से यहां वन क्षेत्र में लकड़ी कटाई का काम रूक गया है जिससे वन्य क्षेत्र सुरक्षित हो गया है।

वर्तमान में खेतड़ी के इस रिजर्व के स्थापित होने से क्षेत्र की जैव विविधता संरक्षण हो रहा है। जैव विविधता संरक्षण में रिजर्व के आसपास के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को भी जागरूक होना पड़ेगा साथ ही वन विभाग द्वारा भी इसमें अपेक्षित सहयोग करना पड़ेगा। क्षेत्र के इस रिजर्व के स्थापित होने के कारण वर्षा जल संरक्षण, मिट्टी कटाव की समस्या से छुटकारा, वनस्पति प्रजातियों का विकास व जंतुओं की प्रजातियों को एक सुरक्षित आसरा मिला है। इस क्षेत्र में आने वाले कुछ वर्षो में पारिस्थिक संतुलन भी स्थापित हो जायेगा, क्षेत्र में अबाध गति से चल रहे खनन कार्य पर विराम लगाकर संतुलित मात्रा में खनन कार्य को स्वीकृति सरकार को प्रदान करनी चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. कुरूक्षेत्र जून 2006 पृष्ठ 3
2. वन विभाग खेतड़ी रिपोर्ट 2023
3. इंटरनेट
4. साईवाल स्नेह, राजस्थान का भूगोल, कॉलेज बुक हाउस, जयपुर 2013
5. शेखावाटी दैनिक भास्कर 27 मई 2023
6. झुंझुनूं पत्रिका 02 जून 2023

Date of Publication: 30-11-2023